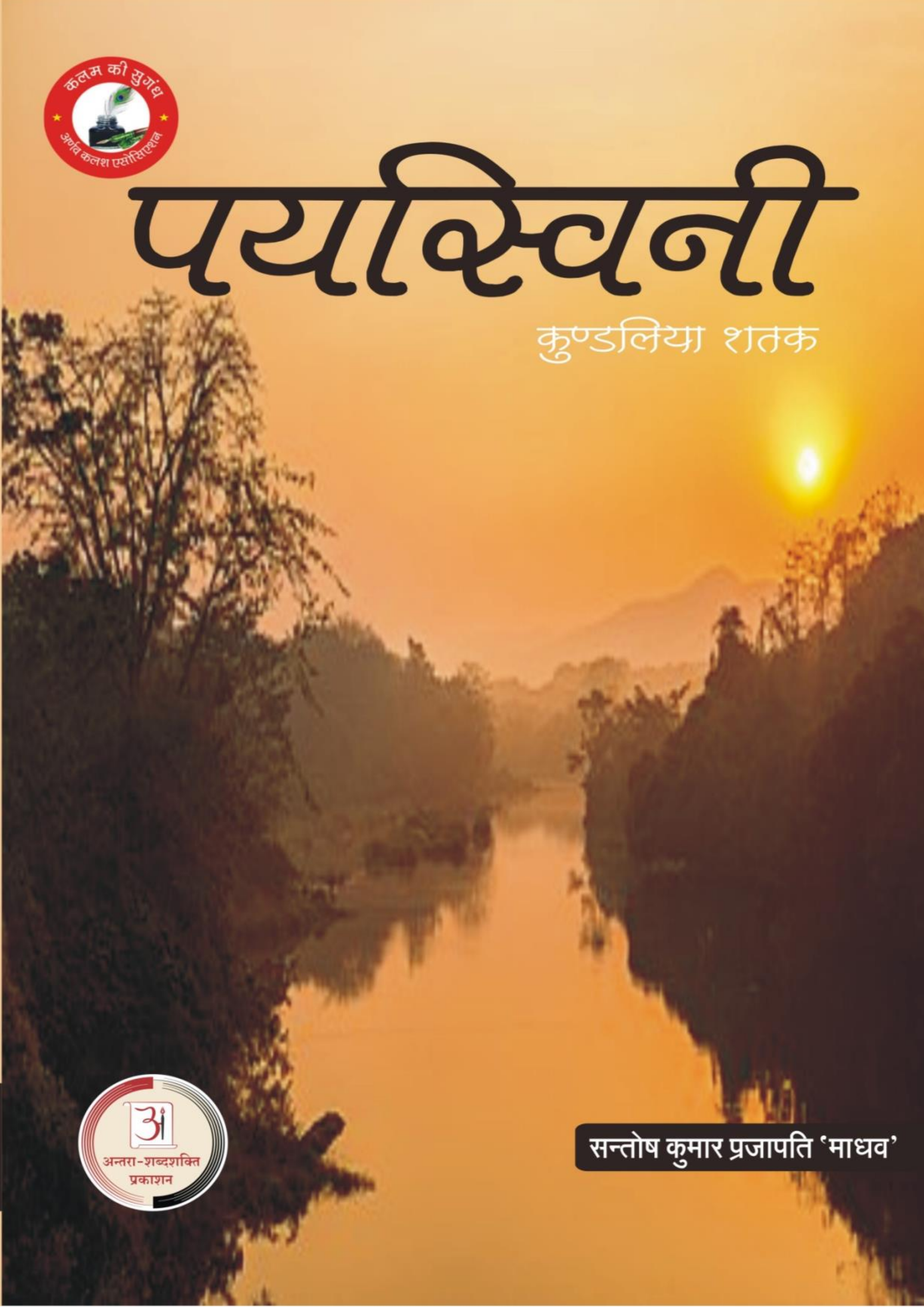

कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

पयस्विनी

कुण्डलिया शतक

सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

पयस्विनी

(कुण्डलियाँ शतक)

(कलम की सुगंध छंदशाला)

सन्तोष कुमार प्रजापति

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-230-2
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, "सन्तोष कुमार प्रजापति"
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY SANTOSH KUMAR PRAJAPATI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

होगा सब अच्छा यहाँ, हृदय रखें सन्तोष।
'सपना' दे शुभकामना, करे यही उद्घोष।।

कलम की सुगन्ध छन्दशाला के द्वारा समय-समय पर छन्द विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में सम्पन्न होते रहे हैं।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगन्ध छन्दशाला ने अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई और आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार भी किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीय सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव' जी का एकल संग्रह "पयस्विनी कुण्डलियाँ शतक" प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीय "माधव" जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीय 'माधव' जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलिया जैसे कठिन छन्द विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नित नई यात्रा तय कर अवश्य ही उत्कर्ष को प्राप्त करेगी।

अ.मंदिलवार

अनिता मंदिलवार 'सपना'
मुख्य संचालिका : कलम की सुगन्ध छन्दशाला साहित्यिक मंच

शुभकामना संदेश

प्रिय सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव' जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह 'पयस्विनी कुण्डलियाँ शतक' विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी। इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं...!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक : कलम की सुगंध छन्दशाला साहित्यिक मंच

समीक्षा

"सपना भी साकार हो, आम लोग या भूप।
जो आलस्य परित्याग कर, कर्म करे अनुरूप।।"

जी हाँ सपना तो सभी देखते हैं और जब सपना पूरा हो जाता है तो उसकी खुशी हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं। श्रीमान सन्तोष कुमार प्रजापति "माधव" जी जो कबरई जिला-महोबा (उत्तरप्रदेश) से हैं, एक विद्वान शिक्षक, लेखक, समीक्षक और प्रसिद्ध कवि हैं।

आपकी कृतियाँ "माधव पंचामृत, अन्तर्ध्वनि" (काव्य संग्रह) हैं। आप की अनेक साझा संकलन (मानक कुण्डलियाँ, निहारिका, आदीप्ता, ये दोहे गूँजते हैं, ये कुण्डलियाँ बोलती हैं प्रकाशित हुई हैं। आपकी लेखनी हर विधा में चली है और आप समय-समय पर साहित्य के क्षेत्र में कुछ न कुछ योगदान करते रहे हैं।

आप 'साहित्य रत्न', 'फणीश्वर नाथ रेणु', 'साहित्य मेधा', 'मुंशी प्रेमचंद्र अलंकरण सम्मान', 'मंजुल मयंक स्मृति सम्मान', 'साहित्य श्री सम्मान', आदि100 से अधिक सम्मानों से सम्मानित हुए हैं। आपको छंद और छंद मुक्त लेखन में महारथ हासिल है। साथ ही कई मञ्चों पर काव्यपाठ का अनुभव भी आपके पास है।

आपने जीवन के हर पहलू पर कुण्डलियाँ सृजित की हैं। महिलाओं को आप विशेष महत्व देते हैं। आपने अपनी प्रस्तुत तृतीय एकल पुस्तक 'पयस्विनी' कुण्डलियाँ शतक में वेणी, कुमकुम, गजरा, काजल, पायल, बिछिया, डोली आदि शीर्षकों पर श्रृंगारिक कुण्डलियाँ सृजित कर चार चाँद लगाने का प्रशंसनीय कार्य किया है। आपने बिंदी को बहुत सुंदर तरीके से समझाया है-

"बिंदी छोटी या बड़ी, करती काम अनेक।
दर्शाती अहिवात तिय,भाल सजाती नेक।।"

माँ का आँचल बहुत सुन्दर शब्दों में बहुत अच्छे तरीके से आपने कुण्डलिया में पिरोया है। इसके अलावा कवि 'माधव' जी ने 'कविता' पर अपने विचार रखते हुए लिखा है कि-

"कविता में जनजागरण, छिपी नीति की बात।
दर्शाए दिग् देश को, सरस सार्थक गात"।।

आपने अपनी 'सखियाँ' कुण्डलिया में बताया है कि सखियाँ अ से ज्ञ तक हर विषय के, हर पहलू का ज्ञान दे सकती हैं।

'अनुपम' शीर्षक के अन्तर्गत आप लिखते हैं-

"गाथा हिंदुस्तान की, अनुपम बड़ी महान।
सोने की चिड़िया यही, जगत करे गुणगान"।।

गागर, सागर, आधा, यात्रा, कुण्डलियाँ तारीफ-ए-काबिल हैं ।

धागा का बखान आपने आकर्षक व्यक्तित्व के माध्यम से बहुत सुंदर किया है। आप ईश्वर में भी विश्वास करते हैं । प्रोत्साहन करने का आपका बड़ा ही अनुपम ढंग है- आगे आओ नवयुवक, रचो सदा इतिहास। वाहहहहह, क्या कहने-लाजवाब।

जाना, दीपक, थाली, उड़ना बहुत बढ़िया कुण्डलियाँ लगीं, बारम्बार पढ़ने का मन होता है। आप भी मीठी बोली बोलने का संदेश पाठकों तक भेज रहे हैं। 'गीता' कुण्डलिया में आप कहते हैं कि-

"गीता वाणी श्याम की, सभी करो रसपान।
शब्द-शब्द सुरभोग सम, यही नीति की खान।।"

कान्हा की चितवन और तिरछी भौहों का ज़िक्र भी आपने अपनी लेखनी से बखूब किया है। शब्दों का चयन, काव्य सौन्दर्य व गेयता बहुत सुन्दर है। साहित्य में आपकी रुचि देखते ही बनती है। आप कामना करते हैं कि सबको जीवन में खुशियाँ मिलें और यही कारण है कि आप भी सदा खुश रहते हैं ।

आप जीवन में उचित चलन पद हेतु अंकुश को अति अनिवार्य मानते हैं। आपने राधा के रूप को अपनी कुण्डलियों में स्थान देकर अपनी पुस्तक 'पयस्विनी' को भी धन्य कर दिया है । आपने बताया है कि माता-पिता की छाया सिर पर हो तो वह सुख का आधार होता है। नारी को भी साहस से परिपूर्ण बता कर मान बढ़ाया है। पीहर हर बेटी को आजन्म अच्छा लगता है। वह हमेशा पीहर की कुशलता की प्रार्थना करती है। आप कहते हैं कि पीहर में ज्यादा दिन रहना ठीक नहीं है, गली - मोहल्ला और सभी लोग संताप देते हैं। आप प्यार के साथ-साथ मोह पर अंकुश रखने की बात भी करते हैं ।

कुल मिलाकर विभिन्न विशेषताओं को संजोए हुए 'पयस्विनी' कुण्डलियाँ शतक अपने आप में एक उत्कृष्ट और अद्वितीय काव्य के रूप में अवतरित हुई है जो कि अवश्य ही मात्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते हुए सभी वय के सुधी पाठकों को एकसमान उपयोगी सिद्ध होगी। मैं राधा तिवारी 'राधेगोपाल' 'पयस्विनी' कुण्डलियाँ शतक के सफलतापूर्वक प्रकाशन की ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। आपके हर सपने जीवन में पूरे हों, आपकी और भी बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित होती रहें। आप दीर्घायु होकर साहित्य सृजन के माध्यम से सदैव ही देश व समाज का मार्गप्रशस्त करते रहें। इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ-

राधा तिवारी"राधेगोपाल"
कवयित्री (एलटी अंग्रेजी अध्यापिका)
रा.उ.मा.वि. सबौरा, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

तूलिका के अमोल बोल

अत्यन्त गौरव के क्षण हैं कि 'अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन' वारासिवनी (म.प्र.) द्वारा प्रकाशित मेरा तृतीय एकल काव्य संग्रह 'पयस्विनी' कुण्डलिया शतक आपके पावन कर कमलों में सुशोभित है।

किसी भी देश व समाज के विकास और जनकल्याणकारी गतिविधियों में वहाँ का साहित्य प्रतिबिम्बित होता है। साहित्य जहाँ एक ओर समाज को सही दिशा चयन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाहित करता है, वहीं दूसरी ओर अन्धविश्वास,पाखण्डवाद व अन्य कुरीतियों जैसी अनेकानेक विद्रूपताओं का क्षरण करते हुए प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण, संगीतमय, सौहार्द्रमय, उल्लसित व आह्लादकारी माहौल बनाने में मददगार सिद्ध होता है।

मेरी दो कृतियों 'माधव पञ्चामृत' व 'अन्तर्ध्वनि' के उपरान्त प्रस्तुत तीसरा काव्य संग्रह 'पयस्विनी' कुण्डलिया शतक निश्चितरूप से उपर्युक्त सभी विशेषताओं को संजोए हुए आपकी पसन्दीदा पुस्तकों में जगह बनायेगा, ऐसा पूर्ण विश्वास है । प्रस्तुत पुस्तक को बाल, युवा, वृद्ध, विद्यार्थी सभी वय वर्ग की अभिरुचियों को सन्तृप्त करने का भरसक प्रयत्न किया गया है । आपको यह कृति कैसी लगी, इस बाबत आप सभी सुधी साहित्यप्रेमियों की प्रतिक्रियाएँ सादर, सहर्ष आमन्त्रित हैं।

आपका

सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'

कबरई जि.- महोबा (उ.प्र.)

(1)
माँ वीणाधारिणी

माता वीणाधारिणी, कमला वाणी आप।
वारिजासना शारदे, सुरसा देवी जाप।।
सुरसा देवी जाप, महाश्वेता ब्रह्माणी।
पद्मलोचना पीत, महाभद्रा कल्याणी।।
'माधव' हंस सवार, सुभद्रा तात विधाता।
चामुण्डा विख्यात, शिवा सावित्री माता।।

(2)
वेणी

जैसे वेणी को लखा, नाच उठा मन मोर।
सुमन सुगन्धित भा रहे, अनुपम पिय चितचोर।।
अनुपम पिय चितचोर, निखारा रूप सलोना।
लहराती कटि पास, लगे मत जादू टोना।।
कह 'माधव कविराय', बचेगा कोई कैसे।
दर्शक सब बेहाल, किया हो मोहित जैसे।।

(3)
कुमकुम

कुमकुम मस्तक में लगा, सुन्दर सुभग निशान।
बाबा बनकर घूमते, माँगें दाल पिसान।।
माँगे दाल पिसान, नहीं खाते हैं इसको।
बेंचें किसी दुकान, भला मालुम मत किसको।।
कह 'माधव कविराय', रहोगे कब तक गुमसुम।
धूल झोंकते आँख, लगा मस्तक में कुमकुम।।

(4)

काजल

मेरा काजल नाम है, काले तन अभिमान।
बुरी बलाएँ टालता, माथे लगा निशान।।
माथे लगा निशान, भवन नव काली हण्डी।
सदा बचाऊँ हाय, रहूँ बनकर मैं चण्डी।।
कह 'माधव कविराय', सदन में सबके डेरा।
नयन रूपसी साज, बताये रिश्ता मेरा।।

(5)

गजरा

गजरा सिर में त्यों लगे, ज्यों तरु ऊपर मोर।
आकर्षित सबको करे, है अनंग का जोर।।
है अनंग का जोर, महक अनुपम अति भीनी।
मन मचले दिल वेध, युवाओं की मति छीनी।।
कह 'माधव कविराय', लगा लोचन में कजरा।
चार चाँद छवि देह, चिकुर रमणी के गजरा।।

(6)

पायल

पायल बजती पैर में, हरती प्रियतम ध्यान।
मादकता ध्वनि में अजब, बौना हो सब ज्ञान।।
बौना हो सब ज्ञान, बहकते अच्छे-अच्छे।
कोविद, योगी, संत, कहें बस भाषण लच्छे।।
कह 'माधव कविराय', सभी को करती कायल।
साज-बाज, सुरताल, मिले फिर देखो पायल।।

(7)

कंगन

नारी के श्रंगार बहु, कंगन उनमें एक।
हाथों की शोभा बढ़े, कहते हैं सब नेक।।
कहते हैं सब नेक, सुहागन इसको पहने।
सुखद, सुभग, रमणीक, खनकते अनुपम गहने।।
कह 'माधव कविराय', सभी की इससे यारी।
भले न भरता पेट, मनोरथ कंगन नारी।।

(8)

बिन्दी

बिन्दी छोटी या बड़ी, करती काम अनेक।
दर्शाती अहिवात तिय, भाल सजाती नेक।।
भाल सजाती नेक, बढ़ाती शोभा तन की।
परिकल्पित त्रय चक्षु, नियंत्रित गति हो मन की।।
कह 'माधव कविराय', गणित सह भाषा हिन्दी।
नारी का श्रृंगार, सभी में गुरुता बिन्दी।।

(9)

डोली

डोली में होती विदा, बात पुरानी यार।
अब नव दम्पति चाहते, नई बुलेरो कार।।
नई बुलेरो कार, सड़क जो सरपट चलतीं।
घर कुछ अरसे बाद, विपिन बाधाएँ टलतीं।।
कह 'माधव कविराय', समय ने मारी गोली।
हुई विलोपित आज, न कोई जाने डोली।।

(10)

आँचल

तेरा माँ आँचल कवच, अलग न करना आप।
जब तक मैं जीवित रहूँ, करूँ तुम्हारा जाप।।
करूँ तुम्हारा जाप, यही प्रभु सच्ची सेवा।
जीवन में सुख चैन, मिलेगा असली मेवा।।
कह 'माधव कविराय', चरण में मस्तक मेरा।
सफल रहे मम जन्म, सदा सिर आँचल तेरा।।

(11)

कजरा

कजरा दृग गजगामिनी, मृगलोचन मृदुचाल।
तिरछी चितवन मदभरी, गजब गुलाबी गाल।।
गजब गुलाबी गाल, रसीले अक्षर अनुपम।
आबनूस त्यों केश, चमकते रद चपला सम।।
कह 'माधव कविराय', चिकुर साजे नव गजरा।
मनमोहक चितचोर, बचाये रमणी कजरा।।

(12)

चूड़ी

चूड़ी तेरे नाम की, पहनूँ भर-भर बाँह।
तुमसे ही श्रृंगार सब, दिल में प्यार अथाँह।।
दिल में प्यार अथाँह, सदा अनुकूल रहे रब।
गह लेना मम हाथ, कदम डगमग हों जब-जब।।
कह 'माधव कविराय', पकाऊँ भोजन पूड़ी।
तेरी करें पुकार, छनन छन बजकर चूड़ी।।

(13)

झुमका

झुमका तेरे साख की, कहते कथा कपोल।
दोलन गति करता हुआ, चुम्बन ले अनमोल।।
चुम्बन ले अनमोल, प्रथम अधिकार जमाये।
जिसने किया विवाह, नहीं वह मौका पाये।।
कह 'माधव कविराय', लगाये गोरी ठुमका।
पौ बारह तत्काल, लहरियाँ लेता झुमका।।

(14)

जीवन

जीवन में सुख-दुख सभी, कर्मों के अनुरूप।
बिन भोगे छूटे नहीं, योगी, निर्धन, भूप।।
योगी, निर्धन, भूप, बुरा-अच्छा जो करता।
अलग-अलग परिणाम, भटकता या वह तरता।।
कह 'माधव कविराय', बदन की उखड़े सीवन।
कृत्य बने इतिहास, सँवारो अपना जीवन।।

(15)

उपवन

जंगल का उपवन अनुज, स्वच्छ रखे परिवेश।
तरु, औषधियाँ, फूल, फल, सुन्दर देश-प्रदेश।।
सुन्दर देश-प्रदेश, प्रदूषण भी कम होता।
मौसम हो सामान्य, न मानव धीरज खोता।।
'माधव' हो सुख चैन, हृदय गर चाहत मंगल।
हरियाली घर रोप, बनाओ छोटा जंगल।।

(16)

कविता

कविता में जन जागरण, छिपी नीति की बात।
दर्शाए दिग् देश को, सरस सार्थक गात।।
सरस सार्थक गात, असर हो औषधि जैसा।
शब्द-शब्द में धार, शिलीमुख अर्जुन ऐसा।।
कह 'माधव कविराय', तमस ज्यों हरता सविता।
शोषण मुक्त समाज, बनाए कल्पक कविता।।

(17)

ममता

ममता की जब बात हो, प्रथम मातु का नाम।
कूट-कूट यह गुण भरा, सदा शरद सम घाम।।
सदा शरद सम घाम, तनय हित चिन्तन हरदम।
अनुपमेय सौगात, बनाया जीवन सरगम।।
कह 'माधव कविराय', करे क्या कोई समता।
बन प्रभु दत्तात्रेय, बताई क्षमता ममता।।

(18)

बाबुल

बाबुल तेरा प्यार मैं, सदा रखूँगी याद।
मुझे भुलाना मत कभी, छोटी सी फ़रियाद।।
छोटी सी फ़रियाद, बहिन, भाई सँग झूली।
सखियाँ, गुड़ियाँ, नीम, न आँगन अब तक भूली।।
कह 'माधव कविराय', रहूँ दिल्ली या काबुल।
जैसे बचपन नेह, वही रखना हे बाबुल।।

(19)
भैया

भइया को दुत्कार मत, बाँध नेह की डोर।
बन्धु साथ जिसके रहे, मिले जीत चहुँ ओर।।
मिले जीत चहुँ ओर, नहीं बाधाएँ आतीं।
बड़ी-बड़ी चट्टान, सहज कंकड़ बन जातीं।।
कह 'माधव कविराय', सदन हर्षित पितु मैया।
बारम्बार प्रयास, अलग भुज मत कर भैया।।

(20)
बहना

बहना बिन सूना सदन, सूने सब त्योहार।
बन्धु बहन से सीखता, नारी सँग व्यवहार।।
नारी सँग व्यवहार, प्रतिष्ठा क्या होती है?
उर में हो आभास, बहन जब भी रोती है।।
कह 'माधव कविराय', हृदय दुख पड़ता सहना।
भाई को मर्याद, सिखाती उसकी बहना।।

(21)
सखियाँ

सखियाँ गुरु क्रम तीसरी, देतीं अदभुत ज्ञान।
अ से ज्ञ तक हर विषय, हर पहलू पर ध्यान।।
हर पहलू पर ध्यान, नहीं वय अन्तर पड़ता।
रिश्तेदारी, गाँव, मदरसा, संघ उमड़ता।।
कह 'माधव कविराय', विदाई भीगें अखियाँ।
कहीं न उतना प्यार, निभाती जितना सखियाँ।।

(22)

कुनबा

छोटा कुनबा हो गया, घटा आपसी नेह।
लुप्त हुए मुखिया सखे, पति, पत्नी, सुत गेह।।
पति, पत्नी, सुत गेह, नहीं कौड़ा रजनी में।
बन्धु, मात, पितु छोड़, सजन सिमटे सजनी में।।
कह 'माधव कविराय', हुआ रिश्तों में कोटा।
स्वजन पड़ोसी रूप, बचा है कुनबा छोटा।।

(23)

पीहर

रुकना मत पीहर सखी, ज्यादा दिन तक आप।
गली, मुहल्ला, नारि, नर, सब देते सन्ताप।।
सब देते सन्ताप, वही जिनको निज माने।
तरह-तरह की बात, अरोचक मिलते ताने।।
कह 'माधव कविराय', पड़े नाहक में झुकना।
स्वर्ग सदृश ससुराल, नहीं अति पीहर रुकना।।

(24)

पनघट

गागर गोरी शीश धर, जातीं पनघट पास।
श्रमकर जल लातीं भवन, दिनचर्या थी खास।।
दिनचर्या थी खास, सहेली हिल-मिल लेतीं।
हो आदान-प्रदान, विचारों को दिल देतीं।।
कह 'माधव कविराय', बचा ग्रामीण न नागर।
सदन सलिल का स्रोत, कहाँ पनघट में गागर।।

(25)
सैनिक

सैनिक सीमा में डटे, घर की बिन परवाह।
शीत, ग्रीष्म, बरसात ऋतु, सिर्फ वतन की चाह।।
सिर्फ वतन की चाह, उन्हें चिन्ता हम सबकी।
धन्य-धन्य जाँबाज, यही सत सेवा रब की।।
कह 'माधव कविराय', उमर पाते ये दैनिक।
कफन तिरंगा ओढ़, अमर हो जाते सैनिक।।

(26)
कोयल

प्यारी कोयल सब कहें, सुनकर मीठी तान।
वही रूप, रँग काग का, मिले न कोई मान।।
मिले न कोई मान, गुणों की पूजा होती।
कर्कशता सर्वत्र, प्रतिष्ठा अपनी खोती।।
कह 'माधव कविराय', विमोहक वाणी न्यारी।
सावन सुन्दर शाख, बोलती कोयल प्यारी।।

(27)
अम्बर

अम्बर खेमा खिल उठा, खग, मृग, जन उत्साह।
दशों दिशाएँ ताम्रवत, देख रहीं नव राह।।
देख रहीं नव राह, नये अरमान सजाए।
खट्टी-मीठी याद, नगाड़े नव्य बजाए।।
कह 'माधव कविराय', विदा अब माह दिसम्बर।
स्वागत हित नववर्ष, तना चहुँ खेमा अम्बर।।

(28)

अविरल

आबादी अविरल हुई, संसाधन कमज़ोर।
परेशानियाँ नित बढ़ें, अपराधों का शोर।।
अपराधों का शोर, किसी की सुने न कोई।
अपनी ढपली राग, अलग जनता सब खोई।।
कह 'माधव कविराय', प्रगति बाधक, बर्बादी।
भरसक करो प्रयास, नियंत्रित हो आबादी।।

(29)

सागर

सागर अतुलित सम्पदा, हिय में भरे समेट।
निश्छल मन फिर भी सदा, करता सबसे भेंट।।
करता सबसे भेंट, मिलन की महिमा न्यारी।
एक रंग मनमीत, नसीहत देता प्यारी।।
'माधव' मत मदचूर, भले धन कोटिक गागर।
बनो धीर, गम्भीर, जगत में जैसे सागर।।

(30)

अनुपम

गाथा हिन्दुस्तान की, अनुपम बड़ी महान।
सोने की चिड़िया यही, जगत करे गुणगान।।
जगत करे गुणगान, मनोहर छटा निराली।
शैलराज, कश्मीर, व कुल्लू संग मनाली।।
कह 'माधव कविराय', वतन का ऊँचा माथा।
जग जाहिर इतिहास, अनूठी इसकी गाथा।।

(31)

धड़कन

जब तक धड़कन वक्ष में, कर लो अच्छे काम।
कब हो जाये बन्द गति, मिटे तुम्हारा नाम।।
मिटे तुम्हारा नाम, निशानी कुछ तो छोड़ो।
याद करें जन बाद, भलाई रिश्ता जोड़ो।।
कह 'माधव कविराय', बदन, धन चलता कब तक।
कर जाओ कुछ खास, रहोगे दुनिया जब तक।।

(32)

नैतिक

मानव बनने के लिये, नैतिक गुण हैं खास।
लुप्त हुआ शायद यही, नहीं किसी के पास।।
नहीं किसी के पास, कपटता सबने ठानी।
जहाँ रखो विश्वास, करें वे बेईमानी।।
कह 'माधव कविराय', भला था पहले दानव।
दुर्गुण का भण्डार, सँजोए अबका मानव।।

(33)

विजयी

प्यारा झण्डा हिन्द का, विजयी विश्व महान।
तीन रंग कहते कथा, चक्र करे गुणगान।।
चक्र करे गुणगान, प्रगति रफ्तार बताए।
केसरिया बलिदान, हरा उन्नति दर्शाए।।
कह 'माधव कवि' श्वेत, अमन का रँग है न्यारा।
वक्ष वास बिन वाद, वतन का झण्डा प्यारा।।

(34)

भारत

माटी भारत देश की, कण-कण है अनमोल।
रत्न जहाँ उगते सदा, सके न कोई तोल।।
सके न कोई तोल, यहाँ अन्तक भी हारे।
रास रचाने कृष्ण, यहीं प्रभु राम पधारे।।
कह 'माधव कविराय', गजब इसकी परिपाटी।
अमर चाहते जन्म, मिले भारत की माटी।।

(35)

छाया

छाया सिर माँ-बाप की, है सुख का आधार।
इन्हें खुशी हरदम रखो, कभी न समझो भार।।
कभी न समझो भार, समय अनुकूल रहेगा।
यश फैले चहुँ ओर, नहीं पथ शूल रहेगा।।
कह 'माधव कविराय', जनक जिस घर हर्षाया।
रचे कई प्रतिमान, मिली ईश्वर की छाया।।

(36)

निर्मल

किसका मन निर्मल रहे, इस कलयुग में यार।
निर्मल ही निर्मल कहाँ, बिछा रहे हैं खार।।
बिछा रहे हैं खार, हमें गुल ही दिखते हैं।
बने हुए हमदर्द, अधोगति वे लिखते हैं।।
'माधव' हाँके डींग, वही मौके पर खिसका।
रखो फूँक कर पाँव, भरोसा है अब किसका।।

(37)

विनती

विनती, औषधि एकसम, काम करे तत्काल।
नर नागर निश्चित वही, नहीं बजाए गाल।।
नहीं बजाए गाल, समय सापेक्ष रहे जो।
करता वह सहयोग, सदा निरपेक्ष रहे जो।।
कह 'माधव कविराय', प्रथम सद्‌गुण में गिनती।
जटिल कठिनतम कार्य, सुगम कर देती विनती।।

(38)

भावुक

भइया भावुक मत बनो, पागल समझें लोग।
हल्कापन महसूस हो, अवनति वाला रोग।।
अवनति वाला रोग, हृदय विचलित हो जाता।
लक्ष्य विमुख हो प्राणि, डगर में ही सो जाता।।
कह 'माधव कविराय', विलखती वनिता, मइया।
दुनिया लेती लूट, बनो मत भावुक भइया।।

(39)

धरती

धरती में पैदा हुए, कर्म हेतु सब भ्रात।
सुख, वैभव, ऐश्वर्यता, दिनकर करे प्रभात।।
दिनकर करे प्रभात, उदर में नग मनचाहे।
कर्मठ लेता खोज, धरा जो कुछ जन चाहे।।
कह 'माधव कविराय', नियति में उसके परती।
समय सुनहरा व्यर्थ, किया उपयोग न धरती।।

(40)

मानव

मानव-मानव में हुआ, आज बहुत ही भेद।
अवनति का कारण यही, ज्यों गागर में छेद।।
ज्यों गागर में छेद, भरेगी कभी न पूरी।
छुआछूत अरु धर्म, बढ़ाते अतिशय दूरी।।
कह 'माधव कविराय', हृदय घुस बैठा दानव।
अपनों से ही दूर, यहाँ बौराया मानव।।

(41)

गागर

गागर मिट्टी से बनी, कुम्भकार के हाथ।
जन्म समय घर आ गई, मरघट में भी साथ।।
मरघट में भी साथ, सदा उपकार घनेरा।
किया तपित तन तृप्त, बकाया कर्जा तेरा।।
कह 'माधव कविराय', भरे उर में ज्यों सागर।
वन्दनीय त्रय कर्म, त्रिया, नागर, सम गागर।।

(42)

सरिता

कल-कल, छल-छल बह रही, सरिता की लघुधार।
परहित जल उर में भरे, सहे प्रदूषण मार।।
सहे प्रदूषण मार, मगर फिर भी हित करती।
धरा-हरा, धन-धान्य, सजाकर खुशियाँ भरती।।
कह 'माधव कविराय', सुरक्षा करिये पल-पल।
जीवन हो आबाद, बहे यदि सरिता कल-कल।।

(43)

गहरा

गहरा मन वारिधि बहुत, मन्थन हो दिन-रात।
नित अन्वेषण रत्न नव, करता सुखद प्रभात।।
करता सुखद प्रभात, सुधा भी इसके अन्दर।
पाता जन श्रमवान, न चञ्चल जैसे बन्दर।।
कह 'माधव कविराय', लगाओ मन मत पहरा।
जो चाहो लो ढूँढ़, हिया रत्नाकर गहरा।।

(44)

आँगन

छोटा आँगन हो गया, अब हर घर परिवार।
भीड़भाड़ भी कम हुई, नहीं चमन गुलजार।।
नहीं चमन गुलजार, घटे सब रिश्ते नाते।
खत्म नीम की छाँव, विहग कब नीड़ बनाते।।
कह 'माधव कविराय', अनिल अरु द्युति का टोटा।
छोटे-छोटे कक्ष, हुआ आँगन भी छोटा।।

(45)

आधा

आधा जीवन रह गया, किया न आधा काम।
पाकर नर तन कीमती, अभी भँजालो दाम।।
अभी भँजालो दाम, नहीं पुनि मौका आए।
होगा जीवन व्यर्थ, समय से चेत न पाए।।
कह 'माधव कविराय', शरण गह माधव-राधा।
करो कृत्य कुछ नेक, सँभालो जीवन आधा।।

(46)

यात्रा

धरती की यात्रा किया, मिले यात्री भिन्न।
कर्मों के अनुसार कुछ, दिखें सुखी कुछ खिन्न।।
दिखें सुखी कुछ खिन्न, मिला उनको वैसा ही।
समय, बुद्धि उपयोग, किया जिसने जैसा ही।।
कह 'माधव कविराय', भलाई सब दुख हरती।
रहो स्वयं खुश आप, बनाओ खुशमय धरती।।

(47)

कोना

कोना-कोना लाल है, थूका गुटका, पान।
सरकारी दफ्तर सभी, लगते कूड़ादान।।
लगते कूड़ादान, व्यसन जो भी नर करते।
थूकदान को छोड़, यहीं पिचकारी भरते।।
कह 'माधव कविराय', मनोवृति का ही रोना।
तम्बाकू उत्पाद, चबाकर रँगते कोना।।

(48)

मेला

मेला को सजनी चली, सजधज सखियों संग।
चम चम चूनर चन्द्र सम, मदहोशी हर अंग।।
मदहोशी हर अंग, चले वह हिरणी जैसे।
बिन मणि के ज्यों व्याल, तड़पते लड़के ऐसे।।
कह 'माधव कविराय', वहीं पर रेलम रेला।
मिलने का नायाब, जगह भी होता मेला।।

(49)

धागा

धागा-धागा जोड़कर, बनता सुन्दर चीर।
आकर्षक व्यक्तित्व हो, रक्षा करे शरीर।।
रक्षा करे शरीर, यही मर्यादा वाहक।
जैसा जिसे पसन्द, कहीं कुछ दुर्गति नाहक।।
कह 'माधव कविराय', न बोलो बोली कागा।
कपड़े सा परिवार, निखारे प्रेमी धागा।।

(50)

निखरी

विखरी हरियाली अवनि, मोहक सुन्दर गात।
ज्यों शादी दुल्हन सजी, मन्द-मन्द मुस्कात।।
मन्द-मन्द मुस्कात, प्रकृति सुषमा है अनुपम।
चन्द्रप्रभा स्नान, छटा में रति भी अति कम।।
कह 'माधव कविराय', अलौकिक आभा निखरी।
रंग - विरंगे पुष्प, अवनि हरियाली विखरी।।

(51)

गलती

गलती पर गलती करें, जानबूझ कर लोग।
रक्षक भी इनके वही, जिन्हें दाम का भोग।।
जिन्हें दाम का भोग, नियम सब वही बनाते।
उल्टा-सीधा काम, नहीं किंचित घबड़ाते।।
कह 'माधव कविराय', प्रजा मत देकर मलती।
नृप उनके अवलम्ब, सदा जो करते गलती।।

(52)
बदला

कैसे अब शासक हुए, बदला-बदला भाव।
कभी जीतकर प्रेम था, आज जीतकर ताव।।
आज जीतकर ताव, पुराना बैर भँजाते।
दुरुपयोग सामर्थ्य, उजागर खार सजाते।।
कह 'माधव कविराय', बने हिरनाकुश जैसे।
सदा रहें मदचूर, अमन होगा फिर कैसे।।

(53)
दुनिया

दुनिया है सुन्दर बहुत, अगर नजरिया साफ।
मन जिसका कलुषित रहा,करे न दुनिया माफ।।
करे न दुनिया माफ, निरंकुश कितना भी हो।
दुर्गति उसकी बाद, प्रभावी जितना भी हो।।
कह 'माधव कविराय', धरा ज्यों नापे गुनिया।
त्यों गुनिया पहचान, प्रणति करती है दुनिया।।

(54)
तपती

तपती वसुधा ज्येष्ठ में, खग मृग जन बेहाल।
दे तरुवर रक्षा करें, अनिल छाँव तत्काल।।
अनिल छाँव तत्काल, असर गर्मी का कम हो।
मानसून बन मेघ, बरसते मौसम नम हो।।
कह 'माधव कविराय', धरा जल को ही जपती।
जहाँ सघन हों वृक्ष, वहाँ कब धरती तपती।।

(55)

मेरा

मेरा जग में मान हो, करें सभी सम्मान।
हर हिय में अभिलाष यह, सब समझें गुणवान।।
सब समझें गुणवान, हमारी तूती बोले।
भला कौन विद्वान, यहाँ सम्मुख मुख खोले।।
कह 'माधव कविराय', यही अभिमान है तेरा।
प्रथम उन्हें सम्मान, चाह जिनसे हो मेरा।।

(56)

सबका

सबका अपना ज्ञान है, सबकी अपनी थाँह।
सचमुच जो ज्ञानी बड़ा, गहे दीन की बाँह।।
गहे दीन की बाँह, नहीं कुछ भेद करे वह।
मानव सेवा धर्म, न झूठा दम्भ भरे वह।।
'माधव' बाँटे स्नेह, पिपासा जो भी तबका।
ईश्वर का प्रिय दूत, भला ही सोचे सबका।।

(57)

आगे

आगे आओ नवयुवक, रचो नया इतिहास।
जैसा भारत चाहते, वैसा करो विकास।।
वैसा करो विकास, किसी को दोष न देना।
मन इच्छित बो बीज, फसल जैसी हो लेना।।
कह 'माधव कविराय', तभी किस्मत ये जागे।
प्रथम बताया मंत्र, व्यवस्था करलो आगे।।

(58)

मौसम

कितना हो मौसम भला, फिर भी वह बदनाम।
कोई छाया चाहता, कोई चाहे घाम।।
कोई चाहे घाम, कहीं पानी की चाहत।
पानी से निर्माण, कहीं पानी से आहत।।
कह 'माधव कविराय', भला जन चाहे जितना।
मौसम का ये हाल, मनुज का होगा कितना।।

(59)

जाना

जाना जग से एक दिन, राजा रंक फकीर।
सदा अमर कोई नहीं, मानो उपल लकीर।।
मानो उपल लकीर, नयन ने जिसको देखा।
हों सजीव-निर्जीव, मिटेगी सबकी रेखा।।
कह 'माधव कविराय', सभी कोविद जन माना।
कर नित अच्छे काम, पड़े किस दिन फिर जाना।।

(60)

करना

करना तो सब चाहते, जग में ऊँचा नाम।
मगर भूल बैठे उन्हें, जिनका ऊँचा दाम।।
जिनका ऊँचा दाम, पिता-माता को भूले।
तनिक न तन, मन शक्ति, फिरें ये फूले-फूले।।
कह 'माधव कविराय', किसी का सुख मत हरना।
कथन कृत्य अनुरूप, अगर सिर ऊँचा करना।।

(61)

दीपक

जलता दीपक रातभर, कभी न माने हार।
करे तमी तमहीन यह, तब सुन्दर उद्‌गार।।
तब सुन्दर उद्‌गार, बदन कितना लघु मेरा।
वदन जलन अतिरेक, मिटाया तमस घनेरा।।
कह 'माधव कविराय', कठिन लोहा भी गलता।
मेरे सम निष्काम, जगत कोई जब जलता।।

(62)

पूजा

पूजा उसकी व्यर्थ है, हृदय न जिसका साफ।
पर पीड़ा ही लक्ष्य बस, ईश्वर करे न माफ।।
ईश्वर करे न माफ, असर भी उल्टा होता।
कर-कर पश्चाताप, अनाथों जैसा रोता।।
कह 'माधव कविराय', सही मानो जो कूजा।
उर दुर्गुण का ढेर, निरर्थक उसकी पूजा।।

(63)

थाली

थाली भोजन, आरती, तिलक कराती खूब।
सामग्री पूजन सजे, हल्दी, चावल, दूब।।
हल्दी, चावल, दूब, कनक भी गूँथों इसमें।
ग्रहण देख भर नीर, निभाती शादी रस्में।।
कह 'माधव कविराय', बताए हालत माली।
पीतल, ताँबा, स्वर्ण, रजत जैसी हो थाली।।

(64)

बाती

बाती ही जलती सदा, बूँद-बूँद ले तेल।
नाम दीप का हो रहा, अजब जगत में खेल।।
अजब जगत में खेल, श्रमिकश्रम कर मर जाते।
लम्बोदर धनवान, हमेशा रौब जमाते।।
कह 'माधव कविराय', भलाई में वय जाती।
मिले नहीं सुख स्वप्न, जला करते ज्यों बाती।।

(65)

आशा

आशा से सब काम हों, यही शक्ति का पुञ्ज।
जीवन जीना अति सरल, सुरभित होता कुञ्ज।।
सुरभित होता कुञ्ज, सफलता गले लगाती।
नव उमंग, उत्साह, हजारों खुशियाँ लाती।।
कह 'माधव कविराय', फटकिये दूर निराशा।
चतुर्मुखी आनन्द, सदा ही रखिये आशा।।

(66)

उड़ना

उड़ना पक्षी गगन में, मत खोना विश्वास।
तेरे ही पर साथ दें, जब तक तन में श्वास।।
जब तक तन में श्वास, पराश्रित कभी न रहना।
करते रहना कर्म, पराभव कभी न सहना।।
कह 'माधव कविराय', नहीं पथ से तुम मुड़ना।
भूल असम्भव शब्द, सतत मञ्जिल तक उड़ना।।

(67)

खिलना

खिलना चाहे हर कली, मिले उचित जल, ताप।
विश्व सुवासित हो सकल, मिट जाएँ सन्ताप।।
मिट जाएँ सन्ताप, खुशी सब गली घरौंदे।
मगर क्रूर, हैवान, चमन माली ही रौंदे।।
'माधव' उर में सोच, सुमन,मधु कैसे मिलना।
जग, जीवन बेजार, न रोको कलियाँ खिलना।।

(68)

होली

होली विद्रूपित हुई, किया व्यसन से नेह।
मुँह काला अदभुत लगे, सकल नशे में देह।।
सकल नशे में देह, करें स्वागत गाली से।
आनन सूँघे श्वान, सने कीचड़ नाली से।।
'माधव' दिल में दर्द, सभी की बिगड़ी बोली।
कैसा यह उत्साह, मनाएँ कैसी होली।।

(69)

साजन

साजन तेरे प्यार में, बहिन, बन्धु, माँ, बाप।
सबको तज मैं आ गई, करूँ तुम्हारा जाप।।
करूँ तुम्हारा जाप, सकल दुनिया हो मेरी।
तुमसे ही श्रृंगार, परम पावन पग चेरी।।
कह 'माधव कविराय', नहीं अर्धांग विभाजन।
उन्नति की गति तेज, पकड़ मेरा कर साजन।।

(70)

सजना

सजना सजना के लिए, दिल को भाए खूब।
मधु मधुरम मुस्कान में, नख शिख जाती डूब।।
नख शिख जाती डूब, मुझे जब पास बुलाते।
आलिंगन मुख चूम, बदन मेरा सहलाते।।
कह 'माधव कविराय', अजब साँसों का बजना।
कामदेव उत्कर्ष, अलौकिक सुख दे सजना।।

(71)

डोरी

डोरी सा मुखिया भला, बाँधे वंश समेट।
लघु, मोटी, पतली, बड़ी, सब लकड़ी से भेंट।।
सब लकड़ी से भेंट, बड़ा सा गट्ठर बनता।
नहीं ढील, नुकसान, लपेटे खुद भी तनता।।
कह 'माधव कविराय', कल्पना मत यह कोरी।
कुछ तो मानव सीख, सिखाए तुमको डोरी।।

(72)

बोली

बोली बोलो कोकिला, हर लो सबका ध्यान।
वर्ण, जाति खुद ही मिटे, तुमसे लें सब ज्ञान।।
तुमसे लें सब ज्ञान, भुला दें रट्टू तोता।
सुन्दरता क्या अर्थ, उमर पिंजरे में खोता।।
कह 'माधव कविराय', चलाओ क्यों मुख गोली।
मित्र-शत्रु निर्माण, कराए तेरी बोली।।

(73)

पाना

पाना कोई चाहता, जब तुमसे कुछ मीत।
तब उसका व्यवहार लख, शब्द-शब्द में प्रीत।।
शब्द-शब्द में प्रीत, बने शुभचिन्तक तेरा।
स्वार्थ सिद्धि के बाद, सदा उसने मुँह फेरा।।
कह 'माधव कविराय', गरल सम इनका गाना।
बरसाती मण्डूक, निकलते जब कुछ पाना।।

(74)

खोना

खोना सच्चे मित्र का, बहुत बड़ा आघात।
पत्नी अरु भाई बिछुड़, दुर्बल करते गात।।
दुर्बल करते गात, अगर ये हों अनुगामी।
नीरस हो संसार, युवा सुत मरे सुनामी।।
'माधव' न्यायी भूप, हटे आजीवन रोना।
पैदा हुआ अनाथ, बचा शिशु को क्या खोना।।

(75)

यादें

यादें तेरी रात-दिन, चेरापूँजी नेत्र।
दर्शन को पथ ताकती, देख दूर तक क्षेत्र।।
देख दूर तक क्षेत्र, पथिक जब कोई आता।
सोचूँ मेरा श्याम, समझ पाया अब नाता।।
'माधव' धोखा देख, लगाऊँ पुनि फरियादें।
जलबिन तड़पे मीन, वही विधि तेरी यादें।।

(76)
छोटी

छोटी-छोटी बात में, नहीं पकड़िये तूल।
अच्छी सेहत के लिए, आप जाइये भूल।।
आप जाइये भूल, फणी विष चन्दन जैसे।
शीतलता अरु गन्ध, सदा बरसाता वैसे।।
कह 'माधव कविराय', पहुँचिए उन्नति चोटी।
पथ कंकड़ सम बात, भुलाओ छोटी-छोटी।।

(77)
मीठी

मीठी बातें कर्णप्रिय, सुनना चाहें लोग।
मगर बोलने में करें, कञ्जूसी का योग।।
कञ्जूसी का योग, नहीं खर्चा कुछ होता।
दौलत के अनुरूप, कड़ा सम्भाषण खोता।।
कह 'माधव कविराय', शरद प्रिय लगे अंगीठी।
हर मौसम इंसान, सुहाए भाषा मीठी।।

(78)
बातें

बातें लड़कों की सुनो, कीचड़ रहे उछाल।
लड़की को घर बाँधते, करते स्वयं बवाल।।
करते स्वयं बवाल, कहीं दिनभर ये घूमें।
धूम्रपान मद्यपान, गली चौराहे झूमें।।
'माधव जी' मत पूँछ, सखा घर कितनी रातें।
लड़की बाहर देख, करें मनमानी बातें।।

(79)

चमका

चमका सूरज गगन में, सुन्दर सुखद प्रभात।
तम भागा-भागा फिरे, नष्ट हुआ सब गात।।
नष्ट हुआ सब गात, छिपा कंकाल धरा में।
रवि जाते विकराल, जमाई धाक जरा में।।
कह 'माधव कविराय', यही कारण है गम का।
दुर्जन पाता स्नेह, दिवाकर जब भी चमका।।

(80)

गीता

गीता वाणी श्याम की, सभी करो रसपान।
शब्द-शब्द सुरभोग सम, यही नीति की खान।।
यही नीति की खान, समझ पढ़ चिन्तन इसका।
दुर्गुणमय संसार, सहारा समझो किसका।।
कह 'माधव कविराय', सुना जिसने रण जीता।
उसका भी उद्धार, किया मन्थन जो गीता।।

(81)

माना

माना प्रभु ने तात का, वचन दिया जो मात।
वन जाकर ही राम ने, कई बनाईं बात।।
कई बनाईं बात, पिता बदला बाली से।
पम्पापुर में ताज, तिलक कैसे थाली से।।
कह 'माधव कविराय', विभीषण अग्रज जाना।
रखा बड़ों का मान, तभी पुरुषोत्तम माना।।

(82)

कहना

कहना तो आसान कुछ, बहुत कठिन निर्वाह।
अम्बर सा जग छा गया, किया वचन परवाह।।
किया वचन परवाह, बिके सुत पत्नी राजा।
हरिश्चन्द्र का सत्य, लखा नभ बाजे बाजा।।
'माधव' बाबा भीष्म, दिया पितु को सुख गहना।
ब्रम्हचर्य संकल्प, निभाया अपना कहना।।

(83)

सहना

सहना गहना मनुज का, रिश्तों में अनुबन्ध।
खट्टा-मीठा अति सरल, रहे सुखद सम्बन्ध।।
रहे सुखद सम्बन्ध, बचाओ नाज़ुक रिश्ते।
बात-बात में ताव, सभी सम्बन्धी रिसते।।
कह 'माधव' कविराय, बड़ों का मानो कहना।
पर अनीति अन्याय, नहीं सपने में सहना।।

(84)

वन्दन

वन्दन चढ़ते सूर्य का, करता सकल जहान।
वही भानु ढलता हुआ, भय अवसाद वितान।।
भय अवसाद वितान, भुलाए गुण ही सारे।
पथ प्रशस्त कर आप, मिली जो प्रभा सहारे।।
कह 'माधव कविराय',न छोड़ो अहिभ्रम चन्दन।
अवगुण सभी बिसार, गुणों का करिये वन्दन।।

(85)

आसन

आसन करना सीख लो, प्रमुख योग का अंग।
छू हो जाती व्याधियाँ, खिले बदन का रंग।।
खिले बदन का रंग, नहीं कुछ भी खर्चा हो।
बालक वृद्ध जवान, सभी से यह चर्चा हो।।
कह 'माधव कविराय', जरूरी समझे शासन।
पाठ्यवस्तु अनिवार्य, किया शिक्षण में आसन।।

(86)

आतुर

आतुर होना अति बुरा, सहज बिगड़ते काम।
नाले उफनाते चलें, कब पहुँचें जलधाम।।
कब पहुँचें जलधाम, डगर में ही खो जाते।
सकल परिश्रम व्यर्थ, मलिन भी ये हो जाते।।
'माधव' ऐसे लोग, नहीं इज्जत ज्यों पातुर।
जग करता उपहास, तबाही लिखते आतुर।।

(87)

आभा

आभा यश विस्तार हो, दशों दिशा सम इत्र।
कूट-कूट सद्गुण भरे, जिस मानव में मित्र।।
जिस मानव में मित्र, नहीं अंकुर हो मद का।
जाति,रंग,धन,रूप,सदन,सुत दम्भ न पद का।।
कह 'माधव' कविराय, महत्ता औषधि गाभा।
वृत्तवान त्यों मान, दशों दिशि फैले आभा।।

(88)

चितवन

तेरी चितवन में नशा, तिरछे नैन कटार।
जिसको भी घायल करे, बनता बदन गिटार।।
बनता बदन गिटार, अजब स्वर में वह बोले।
आँखों में प्रतिबिम्ब, तन्हाई में चहुँ डोले।।
कह 'माधव कविराय', लगाये दस-दस फेरी।
ऐसा फेंका जाल, फँसा चितवन में तेरी।।

(89)

मोहक

मोहक मुख मुस्कान मधु, मनभावन मृदुचाल।
मञ्जुलता मृगलोचनी, माँग मनोहर भाल।।
माँग मनोहर भाल, चिकुर काले घुँघराले।
शया दसन दुति देख, लगाये मुँह में ताले।।
कह 'माधव कविराय', मधुर वाणी ज्यों मोदक।
बिना साज श्रृंगार, लगे तरुणी अति मोहक।।

(90)

शीतल

शीतल हो तन-मन सकल, मित्र पूछता हाल।
दुख में ढाँढस बाँधता, नहीं बजाता गाल।।
नहीं बजाता गाल, सदा ही साथ खड़ा हो।
निज दुख गिरि सम भूल,सखा के हेतु लड़ा हो।।
कह 'माधव' ज्यों पात्र, गुणों में उत्तम पीतल।
ऐसे सच्चा मित्र, रखे हरदम ही शीतल।।

(91)

हारा

हारा वह हारा नहीं, करता सतत प्रयास।
एक दिवस होकर रहे, उसका पूर्ण कयास।।
उसका पूर्ण कयास, समर जब ठन जाता है।
कदम चूमता लक्ष्य, नमूना बन जाता है।।
कह 'माधव कविराय', बनाओ श्रम को गारा।
कितना दुर्गम कार्य, सदा उद्यम से हारा।।

(92)

जीता

जीता तो गद्गद हुआ, उड़ने लगा अनन्त।
चार दिनों के बाद फिर, लूटे वही बसन्त।।
लूटे वही बसन्त, जिन्होंने इसे सजाया।
मद डूबा आकण्ठ, उन्हीं का ढोल बजाया।।
कह 'माधव कविराय', भरा घट जल्दी रीता।
मत करिये उम्मीद, अहम ने उसको जीता।।

(93)

नारी

नारी पानी एकसम, जग दोनों बिन सून।
कारण भी उत्पत्ति के, सुन्दर खिलें प्रसून।।
सुन्दर खिलें प्रसून, सुवासित धरती सारी।
दुनिया का अस्तित्व, उभय खतरे में भारी।।
कह 'माधव' करवद्ध, बनो मत अत्याचारी।
समझो द्वयका मूल्य, बचाओ पानी नारी।।

(94)

साहस

जिसने साहस का किया, जनहित में उपयोग।
उसके सिर प्रभु मढ़ दिया, समझो सरल सुयोग।।
समझो सरल सुयोग, बदल डाली निज किस्मत।
दुस्साहस के साथ, बची कब किसकी अस्मत।।
कह 'माधव कविराय', पढ़ा इतिहास न किसने।
अमर हुआ वह नाम, दिखाया साहस जिसने।।

(95)

नटखट

नटखट होते हैं सदा, बचपन में सब बाल।
बुद्धिलब्धि आधार पर, करते खूब धमाल।।
करते खूब धमाल, नतीजा कैसा भी हो।
निज टोली के भक्त, सखापन जैसा भी हो।।
कह 'माधव कविराय', बहुत जल्दी हो खटपट।
कुछ भावी प्रतिबिम्ब, दिखाते बालक नटखट।।

(96)

अंकुश

अंकुश अति अनिवार्य है, उचित चलन पथ हेतु।
जैसे मानव चाहता, किसी जलाशय सेतु।।
किसी जलाशय सेतु, किनारे दोनों जकड़े।
कुम्भकार सी चोट, सहारा देकर पकड़े।।
कह 'माधव कविराय', विपथ हो सदा निरंकुश।
भय अनुशासन हेतु, जरूरी उत्तम अंकुश।।

(97)

चन्दन

चन्दन विषधर से ढका, ठण्डक करे प्रदान।
दुष्प्रभाव कब रञ्च भी, दिखता कहीं निशान।।
दिखता कहीं निशान, नमूना आप बताओ।
दुर्गुण रखिये दूर, सखापन खूब जताओ।।
कह 'माधव कविराय', जनों का ऐसे वन्दन।
देना जिनका वृत्त, न लेना जैसे चन्दन।।

(98)

थोड़ा

थोड़ा हँस लो बैठलो, बन्धु बान्धव संग।
यही सही आनन्द है, शेष जगत की जंग।।
शेष जगत की जंग, दिवस निशि चैन नहीं है।
कैसी भागमभाग, पिता, पति, पुत्र कहीं है।।
कह 'माधव कविराय', तुम्हें ईश्वर ने जोड़ा।
समय निकालो साथ, बढ़ाओ रंगत थोड़ा।।

(99)

पूरा

पूरा करिये काम वह, जिसे किया आरम्भ।
सतत लगन उत्साह हो, सभी छोड़िये दम्भ।।
सभी छोड़िये दम्भ, दिखाओ अपनी निष्ठा।
उन्नति आशातीत, बढ़ेगी विश्व प्रतिष्ठा।।
कह 'माधव कविराय', रहे मत कार्य अधूरा।
अगर चाह आनन्द, करो सब कारज पूरा।।

(100)

सपना

सपना भी साकार हो, आम लोग या भूप।
जो आलस्य परित्याग कर, कर्म करें अनुरूप।।
कर्म करें अनुरूप, शिथिलता कभी न बरतें।
नियमित अरु क्रमबद्ध, सफलता की दो शर्तें।।
कह 'माधव कविराय', निराशा को मत जपना।
नित द्विगुणित उत्साह, करेगा पूरा सपना।।

रचनाकार का नाम
सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'
कबरई महोबा (उ.प्र.)

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

'माधव पञ्चामृत' रचा, 'अन्तर्ध्वनि' भी साथ।
प्रस्तुत 'कुण्डलिया शतक', सजा आपके हाथ।।
सजा आपके हाथ, लिखे छः साझा संग्रह,
आल्हा-ऊदल वीर, महोबा है जनपद गृह।।
शिक्षण मम व्यवसाय, भजूँ नित सीता राघव।
मैं 'सन्तोष कुमार', मुझे ही कहते 'माधव'।।

नाम-	**सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'**
पिताजी-	श्री रामदास प्रजापति
माताजी-	श्रीमती सियाप्यारी
सहधर्मिणी-	श्रीमती माधुरी प्रजापति
हृदयकणिकाएँ-	कीर्ति देवी व गीतिका देवी
जन्मतिथि -	२८/०७/१९८०
शिक्षा-	परास्नातक (अंग्रेजी, हिन्दी), बी.एड.
व्यवसाय-	शिक्षक
कृतियाँ-	माधव पञ्चामृत (काव्य संग्रह), अन्तर्ध्वनि (काव्य संग्रह), पयस्विनी (कुण्डलिया शतक)
साझा संग्रह-	मानक कुण्डलियाँ, निहारिका, आह्निका, आदीप्ता, ये दोहे गूँजते हैं, ये कुण्डलियाँ बोलती हैं।
सम्मान-	साहित्य रत्न सम्मान, फणीश्वर नाथ रेणु सम्मान, साहित्य मेधा सम्मान, शीर्षक के सितारे सम्मान, मुंशी प्रेमचन्द्र अलंकरण सम्मान, मंजुल मयंक स्मृति सम्मान, साहित्य श्री सम्मान, मुक्तकमणि सम्मान, मुक्तक शतकवीर सम्मान, घनाक्षरी शतकवीर सम्मान, क्षेत्रीय बोली गौरव सम्मान, तुलसी साहित्य साधना सम्मान, शब्द-अस्मिता सम्मान तथा अन्य १०० से अधिक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।
विधा-	गद्य (लघुकथा, कहानी, संस्मरण, लेख), पद्य (सनातनी छन्द व छन्द मुक्त दोनों)।
सम्पर्क सूत्र-	९६९५९४७१५३
पता-	कस्बा, पो.- कबरई (सुभाष नगर), जिला- महोबा (उ.प्र.), पिन कोड- २१० ४२४
मेल -	santoshkumarkabrai 005@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-230-2

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/